माननीय बहन डी तारा जी, IAS, अहमदाबाद म्युनिसिपल कमिश्नर

दिनांक: 8-जून-2015 ब्रह्माकुमारीज़, दिव्य दर्शन भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

मेरा नाम अंजलि है. मैं कक्षा 4 में पढ़ती हूँ. तारा मेम, मैं आपको एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ कि आपके जैसे एक सफल अधिकारी बनने के लिए कौन-कौनसे गुण धारण करना जरूरी है?

डी तारा जी - प्रश्न बहुत कठिन है। उसका जवाब क्या दूँ। सबसे पहले तो में सरला दीदी, ईशिता बहन और मंच पर स्थित सभी को वन्दन करती हूँ। मुझे तो यह प्रोजेक्ट जब इन्होंने आकर बताया कि भगवान का यह कार्य हम भगवान के प्रतिनिधि के रूप में करना चाहते हैं तो मैंने कहा यह तो अच्छा कार्य है और अच्छे कार्य में तो मना करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसमें कोई परेशानी है ही नहीं। मुझे तो बहुत आनंद हो रहा है कि सचमुच यह भगवान् का कार्य आप (ब्रह्मा कुमारीज़) लोग कर रहे हो। और अंत में तो इन (कच्ची बस्ती के) लोगों की जिंदगी सुधरे (यही चाहते हैं)। आखिर मनुष्य क्या है? विचारों का एक पुंज। आत्मा के अनुभव, विचार।

आज मुझे बहुत आनंद हो रहा है, शायद पहली - पहली बार 'कुछ किया है' इसका अहसास हो रहा है। इतनी सुंदर व्यवस्था है, ये बच्चे अगर अपनी ही परिस्थिति में रहते तो इनका भविष्य क्या होता? लेकिन आज जिस परिस्थिति में है.. यहां बैठे हुए मम्मी - पापा को तो लग रहा होगा कि हमारे बच्चे इतने अच्छे हो गए हैं! लग रहा है या नहीं? (सभा में बैठे लोग हाथ उठा रहे हैं)। गरीबी में अधिकतर समय लोग यही सोचते हैं कि अगर हमारे पास धन हो तो हम आगे बढ़ सकते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। आपके विचार अच्छे हो तो आगे बढ़ सकते हैं। आपके बच्चों को अच्छा बनाने के लिए क्या धन की जरूरत है? मात्र (उच्च) विचारों की और मेहनत की जरूरत है। अब पता चला है न? अब आपके बच्चे पहले कैसे थे और अब कैसे हैं? जमीन आसमान का फर्क है न? इसमें सिर्फ एक सहयोग की जरूरत थी। यह (ब्रह्माकुमारीज़) से सहयोग ले आगे बढ़ रहे हो इसका खूब-खूब अभिनंदन।

मुझे तो बहुत ख़ुशी हो रही है कि आप (भगत की चाली) के लोग इन (ब्रह्माकुमारीज़) के साथ जुड़ गए हो। आपकी जिंदगी भगवान् ने सुधार दिया है। इसमें धन आदि की कोई जरूरत नहीं। अभी भी कुछ बहनें होगी भाई होंगे जो वर्षों के अभ्यास के बाद भी कुछ विषयों को सुधार नहीं सके होंगे। अभी थोड़ी और मेहनत करना और उसको भी सुधार लेना। अपने भारत में गरीबी एक आर्थिक परिस्थिति नहीं है परन्तु इसके साथ बहुत सारे शोषण जुड़े हुए होते हैं। गरीब खुद अपना शोषण करवाने के लिए तैयार है ऐसा लगता है। यह अपने देश का दुर्भाग्य है। आज मैं आपको कह रही हूँ कि जिंदगी सुधारने के लिए करोड़ों रुपये की जरूरत नहीं है। एक श्रेष्ठ सहयोग की जरूरत है जो तुम्हें मिल गया है। अब तुम्हें जिंदगी पूरी करने में कोई मुश्किलें नहीं होगी अगर तुम्हारे बच्चों के हाथ पकड़ कर चलोगे। ये (बच्चे) इनका (ब्रह्मा कुमारीज़) वालों का हाथ पकड़कर चल रहे हैं और तुम अपने बच्चों का हाथ पकड़कर चलना तो जिंदगी सुधर जाएगी। यह गारंटी है। (तालियां)

यह एक छोटी सी बूंद तैयार हुई है इसे सागर की तरह विकसित करो। यहां बैठे हुए इतने बच्चों की जिंदगी सुधर जाएगी तो . . मैं कल ही एक फिल्म देख रही थी। गांधी की। टीवी में आ रही थी। मात्र एक व्यक्ति, जब टीवी नहीं था इंटरनेट नहीं था। और वह भी गुजरात का व्यक्ति। प्राय: गुजरात के लोग व्यापार में सफल होते हैं। गांधीजी अहिंसा में सफल हुए। उस व्यक्ति के अंदर कितनी दृढ़ता होगी जो उन्होंने पूरे भारत को अच्छा मार्गदर्शन दिया। इन (बच्चों) में गांधी जितनी शक्ति पड़ी है जिसे विकसित करने के लिए ये (ब्रह्माकुमारीज़) वाले मदद कर रहे हैं। मैं बहुत-बहुत अभिनंदन देती हूँ।

अभी मुझे जो प्रश्न पूछा गया था कि आप सफल अधिकारी हो। मुझे यह पता नहीं था। मुझे अख़बार पढ़ के लगता है कि मैं एक खराब अधिकारी हूँ (हंसी)। ऐसा कुछ नहीं है। आज मैं सफलता का अनुभव कर रही हूँ, यह कहूँ तो चलेगा। मैं यह मानती हूँ कि हम किसी का भाग्य बनाते बिगाड़ते नहीं है परन्तु प्रकृति जो करने की इच्छा रखती है उसे करने दो यह सफलता का एक पहलू है। प्रकृति कभी भी खराब करने की इच्छा नहीं रखती है। परन्तु हम खराब करने की इच्छा रखते हैं और प्रकृति अच्छा करने की इच्छा रखती है तो उसे होने देना चाहिए। बस इतना करो कि खुद की

जिंदगी जिओ और दूसरों को जीने दो। इसमें कोई धन की जरूरत नहीं है, कोई सत्ता की जरूरत नहीं है, कोई अधिकारों की जरूरत नहीं है। तुम्हारे घर में तुम अधिकारी हो, तुम अच्छे अधिकारी बनो। अगर भाई अधिकारी है तो बहन सह अधिकारी बन जाए और बहन अधिकारी है तो भाई उसका सह अधिकारी बन जाए। दोनों मिलकर ठीक से व्यवस्था चलाओ तो बच्चों की जिंदगी सुधर जाएगी।

और मुझे तो लगता है . . मैं आप सभी को कहना चाहती हूँ कि मेरे पापा भी एक इलेक्ट्रीशियन थे। यहां भी बहुत से बैठे होंगे। जो इलेक्ट्रिक का काम करते हैं ऐसे व्यक्ति थे। मेरे पहले मेरे घर में किसी ने कक्षा 10 पास की हुई नहीं थी। मैंने पहली बार पढ़ कर कक्षा 10 पास की। फिर कक्षा 12वीं पास की। फिर B.Sc. फिर M.Sc. फिर IAS. यानी कि कोई पूर्व योग्यता नहीं होती है कि यह व्यक्ति आगे बढ़ेगा और यह नहीं बढ़ेगा। यह हम अपनी बुद्धि में रखते हैं कि मैं यह नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मेरे पास धन नहीं है। हिम्मत हार कर बैठे होते हैं। आपको हिम्मत का हाथ देने ये (ब्रह्माकुमारीज़) वाले खड़े हैं। इनका हाथ पकड़कर आगे बढ़ो।

मुझे आमन्त्रित करने के लिए बहुत-बहुत आभार। मुझे बहुत ख़ुशी हुई है।

...

मुझे और ज्यादा कुछ नहीं कहना है पर अगर आपके घर में टॉयलेट नहीं हो तो हम बंधवा सकते हैं। ऐसी सरकारी योजना है.. आपको सभी को पता है न? जिसके घर में टॉयलेट है उसका उपयोग करो और अगर घर में टॉयलेट नहीं है और जो सार्वजनिक टॉयलेट उपयोग करते हैं उसे भी साफ़ रखने की जिम्मेवारी आपकी है। अपने बच्चों को यह भी सिखाना कि टॉयलेट जाने के बाद हाथ-पैर धुलाई करे और टॉयलेट में भी पानी डालकर साफ़ करे। मेहरबानी करके बच्चा जब छोटा होता है तभी से उसे यह सिखाइये। ठीक है न? हाँ या ना? (हाँ) । बहुत अच्छा।